ऑडियो द्वारा शिक्षा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत हिन्दी साहित्य बी0ए0 आनर्स के मॉडल सिलेबस पर आधारित व्याख्यान माला। ये व्याख्यान माला भारत सरकार की वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट साक्षात डाट एसी डाट इन पर उपलब्ध है जिसमें वीडियो के साथ साथ आलेख भी समावेशित हैं।

ऑडियो द्वारा शिक्षा व्याख्यान माला के अन्तर्गत आइये सुनें कबीर दास पर व्याख्यान। ये व्याख्यान बी0ए0 आनर्स हिन्दी के प्रथम वर्ष के अन्तर्गत भक्तिकालीन काव्य पेपर्स से संबंधित है। व्याख्यान दे रहे हैं दिल्ली यूनीवर्सिटी के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता।

डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता – नमस्ते विद्यार्थी साथियो।

छात्र – नमस्ते सॅर।

डॉ दिनेश – पिछली क्लास में आपने मध्यकालीन पेपर शुरू किया था। (जी सॅर) और मध्यकालीन पेपर में, मध्यकालीन प्रश्न पत्र में हम भक्तिकालीन कवियों को पढ़ रहे थे। (जी सॅर) और आज हमारा विषय क्या है आपको याद है। हमारा विषय है कबीर दास (जी सॅर)। पिछली बार मैंने आपको बताया था कि आज हम कबीर दास पर चर्चा करेंगे और उन कबीर को शुरू करने से पहले हम मध्यकाल की ओर विशेष रूप से मध्यकाल के पूर्वाध की पूर्व मध्यकाल की, उत्तर मध्यकाल की बात हम नहीं करें। (जी) पूर्व मध्यकाल जिसे भक्तिकाल कहते हैं, भक्ति काव्य कहते हैं, उसकी पृष्ठभूमि लेते हुए और कबीर पर आने की कोशिश करें। (जी सॅर) भक्ति का अर्थ है जोड़ना, सामान्य शब्द की बात कर रहा हूं। भक्ति शब्द का अर्थ है जोड़ना और विभक्ति किसे कहते हैं अलग अलग कर देना। (जी सॅर) विभक्त कर देना। भक्ति का अर्थ है जोड़ना किससे जोड़ना यह हम जानेंगे। बहुत बड़ा प्रश्न है। भक्त कवियों को पढ़ते समय, पढ़ाते समय हमारा दृष्टिकोण वही नहीं

रहेगा ये बात आप ध्यान रखिये जो दृष्टिकोण आज से 10–15–20 साल पहले का भक्त कवियों को पढ़ाते समय का था। तो हमारा ध्यान मध्यकालीन कवियों को पढ़ते समय आधुनिक परिस्थितियों के माध्यम से भी आधुनिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में भी उन्हें समझना समझाने का रहेगा। (जी सॅर) और अगर हम मध्यकालीन कवियों को विशेष रूप से भक्त कवियों को उस परिपेक्ष्य में समझते हैं तो निश्चित रूप से हमारे अध्ययन की हमारी समझ की और उनके कथन की वैल्यू मूल्यांकन, मूल्य बढ़ जाएगा। (जी सॅर) पहली बात यह है कि मैंने कहा था कि भक्ति शब्द का अर्थ है जोड़ना (जी) किस से जोड़ना, ये एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका उत्तर मैं नहीं दूंगा, मेरा लैक्चर धीरे धीरे से आपके भीतर इसका उत्तर बैठा देगा और फिर आप बतायेंगे कि इसका उत्तर क्या है? आप बतायेंगे ना। (यस सॅर जी) ठीक है, तो सबसे पहली बात यह है कि भक्त कवियों को कितने वर्गों में बांटा गया अध्ययन के लिए पहले दो वर्ग में। (जी सॅर) एक सगुण साकार रूप में उस परम तत्व की भक्ति करने वाले लोग। एक उस परम तत्व की भक्ति करने वाले निगुर्ण निराकार रूप के लोग। ठीक है, (जी, जी सॅर) तो कबीर आते हैं निर्गुण निराकार रूप की भक्ति करना, करने वाले में (जी, जी) और सगुण साकार रूप की भक्ति करने वालों में आते हैं मुख्यरूप से तुलसी और दूरदास। ये आप जानते हैं (जी) एक बात मैं आपसे जानना चाहता हूं कि निर्गुण और सगुण शब्द को आप पहचानते हैं। (जी) कभी आपने सोचने की कोशिश की कि निर्गुण का सामान्य शाब्दिक अर्थ क्या है और सगुण का सामान्य शाब्दिक अर्थ क्या है। मैं आपसे यह जानने की इस लिए कोशिश कर रहा हूं या इसको मैं स्पष्ट करने की इसलिए कोशिश कर रहा हूं कि जब तक हम शब्दों से खेलने की कोशिश नहीं करेंगे। जब तक हम शब्दों के वास्तविक अर्थ को, अभिप्राय को समझने की कोशिश नहीं करेंगे तब तक हम शायद उससे जुड़े हुए रचनाकारों को पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर पायेंगे। (जी) और आत्मसात नहीं कर पायेंगे तो निश्चित रूप से उसका मूल्यांकन सही नहीं

कर पायेंगे। वो ही घिसा–पिटा पुराना मूल्यांकन कर पायेंगे। जबकि हमारा लक्ष्य किसी भी भक्त कवि को पढ़ने का होगा एक विद्यार्थी के रूप में, एक अध्यापक के रूप में। ना कि एक भक्त के रूप में। (जी) मैं आपको कबीर पढ़ाते समय भक्त नहीं बनाना चाहूंगा। मैं आपको कबीर पढ़ाते समय या तुलसी पढ़ाते समय या सूर पढ़ाते समय, मैं आपको एक स्वतंत्र रचनाकार के रूप में उसको पढ़ाने की कोशिश करूंगा और स्वतंत्र अध्येता के रूप में अध्ययन करने की कोशिश हम इस क्लास में करेंगे। (जी सॅर) ठीक है, तो सगुण शब्द का शाब्दिक अर्थ है गुण सहित (जी सॅर) और निर्गुण शब्द का शाब्दिक अर्थ हो गया गुण रहित। (जी) जिसके लिए ये शब्द हमने दिए हैं वो कोई परम तत्व है और सगुण का अर्थ हो गया गुण सहित और निर्गुण का अर्थ हो गया (गुण रहित) गुण रहित। तो इसका मतलब जिसके लिए हमने यह व्याख्या की ये शब्द दिया (जी) वो परम तत्व है। (जी) तो परम तत्व क्या गुण रहित भी होता है। परम तत्व क्या गुण सहित भी होता है। गुण सहित होता है यह तो हमने सुना है। (जी सॅर) पर गुण रहित कैसे हो गया परम तत्व। (जी सॅर) वो परम तत्व क्या है यह चर्चा अलग है। तुलसी के लिए वो परम तत्व अलग है, सूर के लिए वो परम तत्व अलग है, कबीर के लिए वो परम तत्व अलग है, सूफी कवियों के लिए परम तत्व अलग है, मीरा के लिए परम तत्व अलग है। ठीक है ना । (जी सॅर) तो निर्गुण वो कैसे हो गया। तब हमें यह समझना पड़ेगा निर्गुण का अर्थ है वे गुण नहीं गुण तो उसमें भी है जिसको निर्गुण कहते हैं पर उसमें वे गुण वह नहीं मानते जो गुण सगुण साकार भक्त मानते हैं। सगुण साकार भक्त का अर्थ हो गया ईश्वर को वो मानव रूप में क्रिया करने वाले गुणों वाला मानते हैं (जी सॅर) और जबकि जिसके लिए हमने निर्गुण निराकार के लिऐ बताया, निर्गुण निराकार वाले लोग, निर्गुण निराकार की भक्ति करने वाले लोग निर्गुण ईश्वर को परम तत्व को निर्गुण आकार में निर्गुण रूप में अपना आराध्य माने वाले लोग उसे गुण रहित नहीं मानते बल्कि उसमें वे गुण नहीं मानते जो गुण सगुण साकार वाले

लोग मानते हैं। स्पष्ट हुई दोनों शब्द स्पष्ट हुए। (जी सॅर) निर्गुण का क्या अर्थ हो गया, सगुण का क्या अर्थ हो गया। (जी) इसलिए इस पचड़े से बाहर निकलने के लिए, इस दुविधा से बाहर निकलने के लिए दो शब्द बने साकार और निराकार (जी, यस सॅर) इसलिए मैंने अपने व्याख्यान के शुरू में यह कहा था निर्गुण निराकार, सगुण साकार (जी सॅर) तो निर्गुण और सगुण के विवाद से बाहर निकले के लिए सगुण और साकार और निराकार दो शब्द हमारे सामने आये (जी सॅर) उससे यह विवाद खत्म हो जाता है या मन्द पड़ जाता है। (जी) तो कबीर जिसकी चर्चा हम आज करने जा रहे हैं वो कैसे भक्त हैं निर्गुण निराकार आराध्य के को मानने वाले। (जी सॅर) हम कबीर को जानने की कोशिश करेंगे कि वो वास्तव में ईश्वर को निर्णुण निराकार के रूप में ही मानता है क्या? मैं कुछ प्रश्न आपके सामने आज उठा रहा हूं (जी सॅर) क्योंकि कबीर को केवल हम कुछ साखियां पढ़ कर, कुछ दोहे पढ़कर, पद पढ़ कर यहां पर व्याख्या करके चले जायें (जी) उससे अच्छा यह है कि उनकी कुछ बेसिक चीज को हम पहचानने की कोशिश करें (जी सॅर) क्या कबीर केवल निगुर्ण निराकार को मानने वाले हैं तब वो "हरि जननी मैं बालक तोरा" क्यों कहते हैं जी, (जी) तब वो दुल्हिन गायें मंगल चार, हम घर आओ, राजा राम अवतार क्यों कहते हैं जी (यस सॅर) है ना यह प्रश्न हमारे मन में आता (यस सॅर, जी हां) तब वो राम का नाम क्यों लेते हैं जी, तब वो गुरू गोविन्द दोहू खड़े काके लागूं पांए, बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दियो मिलाये। तब वो गोविन्द और गुरू काके लागूं पाएं ये क्यों कह रहे हैं। शिष्य और गुरू की बात क्यों कर रहे हैं। (जी) इसका मतलब ये है कि कबीर को समझने के लिए, हमें कबीर के व्यक्तित्व के भीतर रखी हुई, छिपी हुई संसलिष्टता को समझना है। आप संसलिष्ट शब्द को पहचानते हैं (जी सॅर) संसलिष्ट, संसलिष्ट का अर्थ होता है एक साथ कई चीजें जिसके भीतर समाहित हैं इकहरी नहीं कई परतों वाली चीजें जिसके भीतर समाहित हैं जो यह भी है, यह भी है, यह भी है, यह भी है और वास्तव में जो यह भी

नहीं हैं। यह भी नहीं है, ये भी नहीं है, ये भी नहीं है, ये भी नहीं है। आप कहेंगे कि सर ये क्या बात कर रहे हैं आप, ये तो बड़ी अजीब बात कर रहे हैं परन्तु कबीर जैसा भक्त, सन्त वास्तव में अपने भीतर छिपी हुई चीज को समझने के लिए आपसे, जनता से, जन मानस से, पाठक से, समाज से वो शक्ति चाहता है जिससे वो अपने आप को, आप तक पहुंचा सके। (जी सॅर) मतलब हम कबीर को समझने के लिए कबीर की वास्तविकता तक पहुंचेंगे तो शायद कबीर को (जान पायेंगे) समझ पायेंगे। इससे पहले मैं आपको कबीर के जीवन के बारे में परिचय दूं। हम सब लोग जानते हैं बचपन से पढ़ते चले आ रहे हैं कि कबीर का जन्म कैसे हुआ। कबीर कैसे नदी में फेंक दिए गये वो बच्चा और उसको एक दम्पत्ति ने कैसे पढ़ाया (जी) पाला। तो ये सब इसकी डिटेल में मैं नहीं जाऊंगा। क्योंकि आप और हम लोग जानते हैं (जी सॅर) मुझे आज इससे आगे बढ़ना है (जी सॅर) पर आप को मैं यह कहना चाह रहा हूं जरा सोचने की कोशिश कीजिए जो बालक नदी में से उठाकर, अगर यह सही है तो, (जी सॅर) अगर यह किवदंती सही है तो जो बालक नदी में से उठाकर किसी दूसरे माता पिता के द्वारा पाला पोसा गया हो उस बालक ने बड़े होते होते कितना संघर्ष किय होगा। (जी सॅर) सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, घर–बार, जाने कितने प्रकार का संघर्ष झेला होगा। (जी, यस सॅर) ये बड़ी स्वाभाविक बात है तो कबीर को हम कबीर बनाने के लिए, कबीर रूप में समझने के लिए इस सत्य को भी समझेंगे (जी,जी सॅर) तब हमें कबीर की वाणी को समझने का मजा आयेगा। (जी सॅर) तब हम कबीर के भीतर बैठेंगे। क्योंकि कबीर के शब्दों को समझने के लिए, कबीर के अक्षरों को समझने के लिए, कबीर की ध्वनि को समझने के लिए, कबीर के प्रतीकों को समझने के लिए, मेरी बात समझ में आ रही है आप लोगों को (हां जी सॅर, जी सर) बोर तो नहीं हो रहे। (नो सॅर) अच्छा, चलिए। तो कबीर के, की वास्तविकता को समझने के लिए हमें उस व्यक्ति के भीतर घुसना पड़ेगा (जी सॅर) तो पहले मैंने आपको उसके भीतर घुसने के लिए आमंत्रित किया

कि हम उस बालक से बड़े होते हुए व्यक्ति ने क्या क्या संघर्ष किया होगा। यह हम समझ सकते हैं। (जी सॅर) आपको याद होगा तुलसी ने भी संघर्ष किया था न (जी सॅर) कितना संघर्ष किया तुलसी ने, आपको याद होगा सूर ने संघर्ष किया और इन सबसे ज्यादा आपको याद होगा मीरा ने कितना संघर्ष किया। इसलिए शायद आप ये मानकर चले जो व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में नामी गिरामी हो जाता है मैं बहुत आम शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूं (जी सॅर) अंग्रेजी में क्या कहते हैं इस शब्द के लिए सेलिब्रिटी (सेलिब्रिटी) आजकल वो शब्द बहुत चल रहा है (हां जी) मार्केट में बहुत तैर रहा है। है ना (जी सॅर) तो जो व्यक्ति नामी गिरामी हो जाता है, प्रसिद्ध हो जाता है, प्रतिष्ठित हो जाता है अपने अपने क्षेत्र में उस व्यक्ति की उस प्रतिष्ठा के पीछे क्या कहानी है उसको हमें पहचानना चाहिए। जरूरी है नहीं (बहुत जरूरी है) है ना, ठीक है। आप यहां तक आये हो। आप आज इस क्लास में बैठे हो तो आपने धीरे धीरे धीरे कितना संघर्ष किया होगा। कितनी मेहनत की होगी और आपको यहां आने में सफलता मिली, ठीक है (जी) तो इसलिए कबीर की पहली बात तो यह है। दूसरी बात हम कबीर का कहां जन्म हुआ उसका, कैसे जन्म हुआ, कब हुआ, हम उसको केवल सूचना के रूप में ले रहे हैं। उसके भीतर की चीजों को समझने के लिए। दूसरी बात जब कबीर ने सोचना शुरू किया होगा (जी) जब कबीर ने जुलाहा का कर्म स्वीकार किया होगा। आप जानते हैं (जी) कबीर जुलाहा थे। (जी) मतलब कबीर कपड़ा बुनते थे। (बुनते थे) हैं ना (जी) ताना बाना उनका प्रिय शब्द है उनकी वाणी में (जी सॅर) "काहे का ताना, काहे का बाना, काहे की भरनी रे" हैं ना (जी सॅर) तो कबीर, एक मैं आपको यह भी बताने की कोशिश करूंगा कि कबीर की वाणी में और खास तौर से कबीर के पदों में उनके पेशे से उनके कर्म से उनकी अजीविका के कर्म से जुड़े हुए बहुत से शब्द यहां से वहां बिखरे हुए हैं। जो कबीर को वास्तव में हमारे सामने एक महत्वपूर्ण कवि के रूप में चिंतक के रूप में, सन्त के रूप में पेश करते हैं। (जी सॅर) और मैं आपसे यह भी गुजारिश करूंगा

मेरा निवेदन यह भी होगा कि आप कबीर को समझते हुए, कबीर के इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों को जरूर समझें और उनमें से कुछ शब्दों का जिक्र में यहां आपके समाने करूंगा। खैर मैं यह बता रहा था कि कबीर ने जब होश संभाला होगा तो उस मध्यकालीन परिवेश में वो जो भक्ति का, वो जो सामाजिकता का वो जो राजनीतिकता का, वो जो अहमयता का हर व्यक्ति सामाजिक, साम्प्रदायिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, दार्शनिक दुष्टि से हर आदमी अपने आपको, अपने आपका अहम ऊपर रखना चाह रहा था। (जी सॅर) राजनीतिक दृष्टि से हर आदमी, हर वक्त, हर राजनेता अपना महत्व ऊपर रखना चाह रहा था। (जी सॅर) इसलिए उस पृष्ठभूमि में कबीर ने हमें कुछ बतलाने की कोशिश की। हमें उस बात को भी समझना है कि कबीर ने कैसे उस बात को कैसे हमारे सामने किन परिस्थितियों में रखा होगा। नम्बर तीन एक और बात देखिऐ ये वो समय था जब एक अच्छे श्रेष्ठ कृतित्व के रूप में, कृतिकार के रूप में कवि लोग उभर रहे थे। (जी) उस समय कबीर कैसी सामान्य भाषा, सामान्य शब्द लेकर हमारे सामने उपस्थित हुआ है। जिसको हमारे भक्ति के आलोचकों ने बड़े से बड़े आलोचकों ने कबीर दास की उस अभिव्यक्ति को शुरू शुरू में अभिव्यक्ति शैली को (जी सॅर) शुरू शुरू में बहुत महत्व नहीं दिया (जी सॅर) जानते हैं न आप इस बात को (जी सॅर) उनकी भाषा को क्या कहा था शुरू शुरू में सदुकणी, पंचमेली, खिचड़ी, पता नहीं क्या क्या भाषा कहा था। (यस सॅर) परन्तु आप को याद है हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम (जी सॅर) पण्डित हजारी प्रसाद द्विवेदी ने क्या कहा था उनके बारे में (वाणी के डिक्टेटर) कबीर वाणी के डिक्टेटर थे बेटा बोलो (वाणी के डिक्टेटर) यस, कबीर वाणी के डिक्टेटर थे क्या कहा था कबीर वाणी के डिक्टेटर थे वे जो कुछ कहना चाहते थे वो सब कुछ अपनी वाणी से कहलवा लेते थे। हो सका तो सीधे सीधे नहीं तो दरेरा देकर (जी सॅर) बेटा आप जानते हो। एक पुस्तक है आप उसको जरूर पढ़िये पुस्तक का नाम है कबीर और लेखक है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। इस पुस्तक में उन्होंने यह वाक्य

लिखा है (जी सॅर) अब आप देखिए मैं वाक्य का अंतिम हिस्सा ले रहा हूं ये कबीर के पृष्ठभूमि का परिचय है तीसरे पक्ष का, पहला पक्ष का क्या था जन्म लेने के बाद युवा होते होते जो संघर्ष किया (जी सॅर) युवा होने के बाद चिन्तक होते होते जो तरह तरह के क्षेत्रों के आधार पर उन्होंने संघर्ष किया। (जी सॅर) और फिर अभिव्यक्ति के लिए जो उन्होंने संघर्ष किया जो उन्होंने दिया जिस तरह से अभिव्यक्त किया उस पक्ष में से पण्डित द्विवेदी जी का एक शब्द ले रहा हूं – दरेरा देकर। जानते हो दरेरा देने का क्या अर्थ है। (जबरदस्ती) जबरदस्ती जिस तरह से हो सका उस तरह से। इसका मतलब जो जिसके भीतर चिन्तन की विषय वस्तु की शक्ति होगी वो उसको किसी भी तरह से आप तक, समाज तक पहुंचाने में सफल हो ही जायेगा। (जी सॅर) भाषा कहीं परेशान नहीं करेगी, अभिव्यक्ति कहीं परेशान नहीं करेगी। हां भाषा और अभिव्यक्ति वहां परेशान करेगी जब अन्दर कहने के लिए कुछ नहीं होगा। (कुछ नहीं होगा) इसलिए बड़ी साफ बात उभर कर आ रही है कबीर के पास कहने के लिए बहुत कुछ था और क्या था उस पर हम चर्चा करेंगे वहां पर आ रहे हैं। तो दरेरा देने का अर्थ हो गया जबरदस्ती उन्हेंने भाषा की गिरेहबान पकड़ी और अपनी बात आप तक पहुंचा दी। तो फिर सदुगुणी भाषा कहां से रह गयी जी। (जी) फिर तो वो आपके लिए कुछ कहना चाहते हैं आप तक आकर पहुंचते हैं इनके लिए कुछ कहना चाहते हैं इन तक पहुंचते हैं। उनके लिए कुछ कहना चाहते हैं उनतक पहुंचते हैं। इन इन का क्या अर्थ है जान रहे हो मैं क्यों कह रहा हूं। अगर वो एक पढ़े लिखे व्यक्ति के सामने कुछ कहना चाहते हैं तो उनकी भाषा की शैली, भाषा का स्वरूप बदल जाता है। (जी सॅर) अनपढ़ व्यक्ति के लिए कुछ कहना चाहते हैं भाषा का स्वरूप बदल जाता है। राजनेता के लिए कुछ कहना चाहते हैं भाषा का स्वरूप बदल जाता है। पंडित पुजारियों के लिए कुछ कहना चाहते हैं भाषा का स्वरूप (बदल जाता है) बदल जाता है। इसका मतलब वो बहुत बड़ा जादूगर था। (जी सॅर) बहुत बड़ा चिन्तक था (जी सॅर) बहुत बड़ा

विचारक था। अगर वो ऐसा था तो हमें उसके इस सच को पहचानना चाहिए। (जी सॅर) केवल कबीर को हम एक भक्त कहकर एक सन्त कह कर उसका अवमूल्यन नहीं कर सकते। ठीक है हम भक्त और सन्त कहकर उसका अवमूल्यन नहीं कर रहे हैं पर मेरा यहां पर अवमूल्यन शब्द का इस्तेमाल करने का अर्थ है कि हम उसे केवल एक सीमित दायरे में नहीं बांध सकते (नहीं बांध सकते) उसके भीतर एक विशेष प्रकार की शक्ति है जो हमें आज भी परेशान करती है और बेटा एक चीज और बता रहा हूं शायद आपको इस बात का ज्ञान होगा कि कबीर अपने समय में बहुत विवादास्पद रहे। (जी सॅर) बहुत ज्यादा अस्वीकृत रहे (जी सॅर) जानते हो और कौन रहा था (जी सॅर) निराला भी अपने समय में बहुत इसी तरह बहुत विवादास्पद रहे परन्तु कबीर जिस तरह से आज जन के कवि के रूप में, जन के चिन्तक के रूप में उपस्थित हैं उसी तरह से आप जानते हैं निराला की शक्ति भी आज पहचानी जा रही है। (जा रही है) उनके बाद। (जी) उसके पीछे कई कारण हो सकते हैं जी उन कारणों को हमें पहचानना है (जी) एक अच्छे अध्येता को पहचानना है। **एक अच्छे मूल्यांकनकार को पहचानना है। एक अच्छे आलोचक को पहचानना है। वो भक्त नहीं पहचान सकता। भक्त तो उसकी वाणी में डूबने की कोशिश करेगा। जब कि हम विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है, अ**ध्यापकों का कर्त्तव्य है, चिन्तों का कर्त्तव्य है कि उसकी वाणी में डूबने के साथ साथ उसके भीतर छिपे हुए विभिन्न प्रकार के रत्नों को निकाल कर लाना (जी सॅर) चलिए। इसके बाद हम चर्चा करते हैं दूसरी चर्चा करते हैं वो चर्चा है कि कबीर वास्तव में समाज के बने बनाये ढांचे को पसंद नहीं करते थे। (जी सॅर) क्यों पसंद नहीं करते थे? मान लीजिए एक जातिवाद का ढांचा है, (जी सॅर) मान लीजिए एक साम्प्रदायवाद का ढांचा है, (जी) मान लीजिए एक वर्गवाद का ढांचा है, मान लीजिए एक क्षेत्रवाद का ढांचा है, मान लीजिए एक पढ़े लिखों का ढांचा है, एक राजनेताओं का ढांचा है। (जी सॅर) हर जीच का अपना सिस्टम होता है, व्यवस्था होती है। किन्तु कबीर दास किसी भी

व्यवस्था को पसंद नहीं करते थे क्योंकि आप देखिए पीछे मुड़कर जाइऐ जिसका मैंने संकेद दिया था क्योंकि उनका जन्म ही व्यवस्था विरोध के रूप में हुआ था। (जी सॅर) उनका लालन पालन ही व्यवस्था विरोध के रूप में हुआ। तो निश्चित रूप से वो संघर्ष उनको व्यवस्था विरोध, जाति विरोध, वर्ग विरोध मतलब एक शब्द का इस्तेमाल करें सीमिता और संकीर्णता कबीर दास सको पसन्द (नहीं थी) और सीमितता और संकीर्णता अगर कबीर दास को पसंद नहीं थी तो निश्चित रूप से कबीर दास ने एक मंत्र दिया होगा और वो मंत्र था मानववाद का। (जी सॅर) मानवता का। आज के जमाने में आप देख रहे हो ह्यूमैन राइट कमीशन है ना (जी सॅर) ह्यूमैन टेरियन ग्रान्ड शब्द सुनते हो अंग्रेजी का है ना (जी सॅर) वी आर ह्यूमेन बींग (जी सॅर) हम एक आम आदमी हैं तो हमारे कुछ आम आदमी के, सामान्य आदमी के कुछ अधिकार होंगे। (जी सॅर) जो अधिकार जाति, भाषा, वर्ग, क्षेत्र से ऊपर होंगे। (जी सॅर) एक आम आदमी के होंगे (जी सॅर) कबीर दास ने उस आम आदमी के अधिकार को, आम आदमी के असत्तिव को पहचानने और पहचनवाने की कोशिश की। (जी सॅर) कभी सोचा था ऐसे आपने जानते हो नहीं ना, नहीं ना। (नहीं सॅर) तो आज सोचने की कोशिश करोगे ना (जी सॅर) और जो कबीर की कोई साखी पढ़ोगे, मैं भी कुछ साखियां पढ़ूंगा आपके टैक्सट में लगा हुआ है ना आपके पाठ्यक्रम में कुछ साखियां लगी हुई हैं। मैं उन पर चर्चा करूंगा। (जी सॅर) तो उसके पहले ये बैकग्राउण्ड ताकि उस साखी में पढ़ूं तो आपके भीतर तरह तरह की चिंगारियां विचार की चिंगारियां, कैसी चिंगारियां निकलेंगी (विचार की) विचार की ऐसी चिंगारियां नहीं निकल जायेंगी। विचार की चिंगारियां निकलें, सूत्र निकलें, आपके भीतर से व्याख्याएं निकलें और उन व्याख्याओं को आप समझने समझाने की कोशिश करें। (जी) नम्बर एक, नम्बर दो हमारे सामने एक बात और भी स्पष्ट होती है कि उन्होंने आत्म चिन्तन पर बल दिया। वो सुनी सुनाई बात पर विश्वास नहीं करते, देखी दिखाई बात पर विश्वास नहीं करते हैं। मैंने ऐसा देखा वो कहते हैं मैंने

ऐसा देखा होगा पर मेरी आंखें धोखा दे गयी होंगी। देखा तो है, सुना तो है, पर कान धोखा दे गये होंगे। (जी) मेरे शब्दों को जरा ध्यान दीजिए मैंने ही सुना पर विश्वास नहीं कर रहा। मैंने ही देखा पर विश्वास नहीं कर रहा, कबीर विश्वास नहीं करता। (जी) फिर कबीर किस पर विश्वास करता है जो देखा है, जो सुना है उस पर चिन्तन करता है, उस पर मनन करता है। (जी सॅर) और उस मनन करने के बाद जो चीज समझ आती है उस पर विश्वास (विश्वास करता है) करता है। इसलिए कबीरदास को समझने के लिए कबीर की एक पंक्ति याद आनी पड़ेगी "तू कहता कागज की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी" (आंखिन की देखी) तो यहां आंखिन की देखी। तो यहां आंखिन की देखी का क्या अर्थ हो गया इन आंखों से देखी हुई बाहरी चक्षुओं से देखी हुई (जी सॅर) नहीं आत्मज्ञान, आत्मचिन्तन, स्वाध्याय, स्वःअनुभूति। बहुत महत्वपूर्ण शब्द है कबीर के लिए आप नये कवियों के लिए भी जो प्रगतिवाद के बाद बहुत नये कवि आये न। नये कवियों के लिए भी स्वानुभूति की शब्द का बहुत इस्तेमाल करेंगे। बहुत पढ़ेंगे परन्तु कबीर भी स्वानुभूति शब्द स्वानुभूति सत्य को बहुत महत्व देते हैं जिसको आप यहां पर पढ़ेंगे "भोगा हुआ यथार्थ" (जी) पढ़ा है ना नई कविता में (हां जी सॅर) वहां पर उसको भोगे हुए यथार्थ को दूसरे रूप में समझेंगे तो आप देखिए, कि कभी सोचने की कोशिश कीजिए कि मध्यकाल और आधुनिक काल इस तरह से कितने नजदीक, कितना पुल ब्रिज बनने की कोशिश होती है। आप इन शब्दों से उनको भी पहचान सकते हैं उन शब्दों से इनको भी पहचान सकते हैं। (इनको भी पहचान सकते हैं) परन्तु अर्थ अलग हो जाएगा (जी) अर्थवत्ता अलग हो जाएगी, अभिप्राय अलग हो जाएगा, संदर्भ अलग हो जाएगा समझ रहे हैं ना। जो संदर्भ मीरा का था वो ही संदर्भ महादेवी का तो नहीं रहेगा ना। (ना) पर महादेवी के भीतर भी संघर्ष है आत्मसंघर्ष है और मीरा के भीतर भी संघर्ष है। (संघर्ष है) और आत्म संघर्ष है। तो हमारे सामने पहली बात और दूसरी और तीसरी बात उभर कर आ रही है आत्मचिंतन (जी सॅर)

क्लीयर होती बात। (जी सॅर) अच्छा उसके बाद देखें कबीर दास ने ये जो आत्मचिन्तन है, जो संघर्ष है, जो विरोध है, जो व्यवस्था विरोध है इसको सुनकर, पहचानकर अनुभव करके आत्मचिन्तन करके भीतर ही नहीं रखा, ये विचित्र आदमी है कबीर। आप इसको इतना आसान मत समझिए (जी) बहुत विचित्र हैं (जी) उसको भीरत ही नहीं रखा। हम आजकल बहुत कुछ देखते हैं बहुत कुछ झेलते हैं पर हम उनमें से इतने कौन लोग हैं, कितने लोग हैं, कितने पर्सेन्ट लोग हैं जो उसको कह देते होंगे सही को सही कहते होंगे, गलत को गलत कहते होंगे है ना (जी) आपने कभी जब हम सड़कों पर यात्रा करते हैं तो कुछ कुछ ट्रकों के, और थ्री व्हीलर, टैक्सियों के पीछे कुछ कुछ साहित्य लिखा होता है ना (जी सॅर) उस साहित्य को मैंने पढ़ा जिसमें एक लिखा था "जो सही बस वही" अब देखिए एक भाषा है न जो सही बस वही। अब वहां तो लिखा हुआ है साहित्य वो स्लोगन तो बहुत बढ़िया है मुझे बड़ा अच्छा लगा (जी सॅर) याद करने का मन करा, याद कर लिया। परन्तु क्या हम जो सही बस वही के समीकरण का पालन कर पाते हैं। (नो सर, नहीं सॅर) पता नहीं कितनी कितनी परेशानियों में फंस जायेंगे। जो सही वही कहेंगे उसी पर चलेंगे। जो हम सही मानते हैं जो वास्तव में सही है परन्तु मैं जो आपके सामने कहना चाह रहा हूं कबीर दास ने इतनी सारी चीजों के बावजूद कबीर दास ने जो सही लगा। जो सही महसूस किया उसको कहा, चुप नहीं रह गये बेवाक रूप से कहा। कहीं चाइनी में लपेटकर कहा प्रतीकों के माध्यम से कहा पर कबीर प्रतीकों को या चाश्नी को या दूसरे तीसरे माध्यम में बहुत विश्वास नहीं करते हैं। हालांकि कबीर ने बहुत कुछ लिखा है। ऐसे परन्तु हम ये देखेंगे कि कबीर दास ने जो कुछ महसूस किया जो अनुभव किया। जो आंखों से देखा। आखें ध्यान से देखिए कबीर दास के शब्दों को पहचानना है वो आत्म की आंखें हैं, (जी सॅर) ये आंखे नहीं हैं, ये भौतिक आखें हैं। (जी) वो आत्मा की आंखें हैं, भीतर की आंखें हैं और उनसे जो देखा उसको बेवाक रूप में कहा और जब बेवाक रूप में हम कुछ कहते हैं तो जो समाज है वो

इतनी जल्दी थोड़े ही स्वीकार कर लेगा। अगर समाज विरोधी बात है समाज को अच्छा नहीं लग रहा (जी) तो हमारे सामने खड़ा नहीं हो जाएगा वो। (जी सॅर) हमारे सामने तीर साधके, बन्दूक साधके खड़ा हो जाएगा कि कैसे वो गाली दे रहा है। (जी सॅर) परन्तु आपने कबीर वाणी को अगर पढ़ा होगा अपने पाठ्यक्रम में लगी हुई कबीर वाणी को ही पढ़ा होगा तो आपको लगा होगा कि कबीरदास की शब्दाबली में, कहने के ढंग में, शैली में, एक खास किस्म की सफाई है एक खास किस्म की ईमानदारी है और एक खास किस्म की तपाक भाषा है। (जी सॅर) इसी को पण्डित द्विवेदी जी ने इस शक्ति को पहचाना था और उनको कहना पड़ा कि वो वाणी के डिक्टेटर थे और वाणी के डिक्टेटर से बड़ा शब्द मैं मानता हूं उनको कहना पड़ा कि उसको दया देकर उसने कहलावा दिया। ये बात क्लीयर होती है। (जी सॅर) अब हम आगे चलते हैं। ये बताइए पहले कि यहां तक जो हमने सुना इस पर आप कुछ चर्चा करना चाहते हैं एक आध मिनट। (जी सॅर) आप इसपर कुछ पूंछना चाहते हैं।

छात्र – जी सर, मैं पूंछना चाहती हूं।

डॉ0 दिनेश – तुम्हारा नाम रूचिका है।

छात्रा – जी सर

डॉ0 दिनेश – हां बेटा बताओ, क्या पूंछना चाहती हो।

छात्रा – सॅर मैं कबीर के विषय में पूंछना चाहती हूं जो आपने व्याख्यान अभी दिया है उसके थोड़ा इतर भी जा सकता है वो कबीर को पढ़ते पढ़ते तकरीबन 5 वर्ष हो जायेंगे। तो ये जानना चाहती हूं कबीर के बारे में कि कबीर ने अपने आपको अनपढ़ भक्त बताया है "मसि कागज छुओ नहीं कलम गही नहीं हाथ" तो बात मैं कितनी सच्चाई है।

डॉ0 दिनेश– मैं समझ गया आपका प्रश्न। देखिए मसि कागज छुओ नहीं, कलम गही नहीं हाथ। (जी) आज 21वीं शताब्दी में हम लोग हैं (जी) आप सोच के देखिए ये शब्द क्या इतने आसान है (नो सॅर) क्या वो किसके लिए

आया क्यों आया। क्या केवल किताबी ज्ञान शास्त्र ज्ञान पर कबीर टिके रहे (नहीं) शास्त्र ज्ञान, शास्त्र ज्ञान सब कुछ प्राप्त किया (जी) सत्संगति से प्राप्त किया (जी) परन्तु फिर भी वो ये कहना चाहते हैं "मसि कागज छुओ नहीं" (हूं) तुलसीदास ने भी तो कहा था रामचरित्रमानस में शुरू शुरू में (जी) ना ना पुराण निगमागम संगमत ये कथा जो मैं कह रहा हूं मुझे नहीं आती है। परन्तु यहां वहां से बटोर कर आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। ये एक अभिव्यक्ति की सच्चाई है। जो अभिव्यक्ति की सच्चाई कबीर को एक महत्वपूर्ण शक्सियत बनाती है। (जी सॅर) इसका मतलब ये है कि किताबी ज्ञान या शास्त्र ज्ञान या यहां वहां से एकांगी ज्ञान पर कबीर विश्वास नहीं करते। इसको उन्होंने मसि कागज के माध्यम से कह दिया नम्बर एक। नम्बर दो उस समय आप जानते हैं कि लिपि मतें लिखना कबीर या उन सन्तों का उतना रिवाज नहीं था। उस समय तो वाचक क्रिया चल रही थी, वाचक प्रणाली थी। तो सन्त बोलते थे, गाते थे, तन्मय हो जाते थे। तो बाद में उनकी वाणियों को लिपिबद्ध किया गया तो वो ये कहते हैं कि जो लोग इसका तीसरा न्यूसेन्स देखिए तीसरा अभिप्राय देखिए जो वे ये कहना चाहते हैं कि जो लोग केवल किताबी ज्ञान के पीछे अपने आपको सर्वेसर्वा मानते हैं बड़ा मानता हैं उनके लिए मैं निवेदन नहीं कर रहा हूं। मैं तो उन लोगों के लिए निवेदन कर रहा हूं क्योंकि मैं भी अनपढ़ हूं भैया और उन लोगों को कह रहा हूं जो सामान्य आदमी है (जी) सामान्य पढ़े लिखे लोग है। आम जनता है इसीलिए तो कबीर को जन का कवि कहते हैं ना (हां, जी सॅर) आम आदमी का कवि कहते हैं। परंतु इससे बड़ा अर्थ निकलता है कि जो व्यक्ति इतना सामान्य व्यक्ति था इतना सामान्य ज्ञान जिसको था वो व्यक्ति वास्तव में इतना सामान्य ज्ञान वाला नहीं था। (नहीं था) बावजूद इसके कि उसने मसि कागज छूआ नहीं था तो उसकी शब्दावली को केवल हम शाब्दिक अर्थ में नहीं जाएंगे। उसके गहराई के अर्थ में जायेंगे। ये क्लीयर होती है बात। ठीक है और इसके बाद हम आगे चले और किसी को कुछ पूंछना है।

छात्र – सर कबीर ने अपने समय की सारी लगभग सभी बुराइयों का विरोध किया जो उनको लगा कि इसमें बुराई है तो लेकिन सर उन्होंने नारी के बारे में बहुत कुछ उल्टा सीधा बोला है मतलब जितना मुझे लगता है कि वो उनको मतलब समाज से बिल्कुल अलग चीज समझते हैं वो खूब गालियां उन्होंने पानी पी पी के गाली दी है। तो सर कबीर जो है नारी के पक्ष या विपक्ष में है।

डॉ0 दिनेस – मैंने आपका प्रश्न समझ लिया। ये प्रश्न वास्तव में बहुत पुराना है कबीर के साथ चिपका हुआ है। ये प्रश्न तुलसी के साथ भी बीच बीच में आकर तुलसी को भी परेशान करता है। पर वास्तव में आप समझने की कोशिश कीजिए कि कबीर दास ने ये भी कहा "नारी तो हम भी करि राखा नाही विकार" ये भी बात पढ़ा है आपने वो नारी को कितना ऊंचा दर्जा दे जाते हैं नारी तो हम भी करि – मेरे भी पत्नी है मैं भी घर वार वाला व्यक्ति हूं। राखा नहीं विकार। उनका लक्ष्य है केवल एकांगी रूप से किसी के साथ जुड़ना। समाज में, संसार में, संस्सृष्टि में, सृष्टि में वे किसी एक तत्व के साथ नहीं जुड़ना चाहते थे। एकांगी नहीं होना चाहते थे और हर जगह एक साथ न जुड़कर वो सबसे तरह तरह की अभिव्यक्ति लेना चाहते थे अनुभूति लेना चाहते थे। उन्होंने नारी को तो माया का रूप भी दिया (जी) है और माया को महाठगनी भी बता दिया है। (जी) तो ये जो प्रश्न है ये प्रश्न बहुत पुराना हो चुका है। हम कबीर की कुछ साखियों के बेस पर, कुछ वाणी के बेस पर हम कबीर दास को या सूरदास को या तुलसीदास के एक पंक्ति के बसे पर बल पर हम कबीर और तुलसी की उनका मूल्यांकन इस रूप में करने की कोशिश करते हैं। जब कि आप यह देखो कि नारी के प्रति उनके मन में कितना मान सम्मान रहा होगा। उनकी मां के संबंध में कौन सी मां जिसने उसको पाला जिसने उसको बचाया है इसीलिए इसलिए आप ये देखो जो कबीर क्यों कह रहा है? किस रूप मैंने आपको यही कहा कि कबीर ने कोई बात किस परिपेक्ष्य में कहीं, किस वाणी के रूप में कहीं, किस अभिव्यक्ति

के रूप में की? हमें उस संदर्भ को समझना है न कि उस शब्द को समझना है वो हरि जननी वो हरि को जननी भी बता रहा है मैं बालक तोरा अपने आप को उसका बालक भी बता रहा है काहे न अबगुण बकसोऊ मोरा – वो ये भी कह रहा है वो जननी का एक विशेष महत्व देता है। इसलिए नारी के प्रति अगर कबीर के मन में कोई शकोशुबाह होता तो शायद वो इस तरह से नहीं कहते परन्तु कहीं कहीं उन्होंने किन्ही किन्ही लक्ष्य को ध्यान में रखकर किन्ही किन्ही लोगों को ध्यान में रखकर किसी किसी वर्ग को ध्यान में रखकर उन्होंने वेवाक यही तो कबीर शास्त्र के पास सबसे बड़ी बात है कि वो जो कुछ देखते हैं। जहां बुराई देखते हैं वहां अपनी बात कह देते हैं। अब मैं आपको कबीर के कुछ छन्दों की चर्चा करता हूं। (जी सॅर) आपने कबीर के कुछ छन्द सुने हैं। (जी सॅर, यस सर) हम लोग कबीर की वाणी वो वाणी जो आपके पाठ्यक्रमों में लगी हुई है उसको सुनने की कोशिश करते हैं (जी सॅर) चलिए हमने एक बहुत बड़े विद्वान कवि बुला रखे हैं और वे आपके सामने कबीर की वाणी का पाठ करेंगे। (जी सॅर)

राम नाम के पटन तरे, देवे को कछु नाहीं, राम नाम के पटन तरे, देवे को कछु नाहीं, क्या ले गुरू सन्तों लिए हौंस रही मन माही। (वाह वाह– वाह वाह) सत गुरू की महिमा अन्नत, अन्नत किया उपकार, सतगुरू की महिमा अन्नत, अन्नत किया उपकार, लोचन अनन्त उधारिया अन्नत दिखावन हार। (वाह वाह– वाह वाह) माया दीपक– नर पतंग, भ्रमि भ्रमि माही पड़ंत कह कबीर गुरू ज्ञान ते एक आद उबरंत। (वाह वाह– वाह वाह) कहे कबीर गुरू ज्ञान तें एक आद उवरंत, विरह विरह मत कहो, विरह है सुल्तान जिंह घट विरह न संचरे सो घट सदा मसान (वाह वाह– वाह वाह बहुत बहुत अच्छा) विरहा विरहा मति कहो विरह है सुल्तान जिंह घट विरह न संचरे सो घर सदा मसान (वाह वाह– वाह वाह) कबीर सूता क्या करे उठ के रोवे दुख, कबीर सूता क्या करे उठ किनी रोवे दुख जाको वासा गोर मं सो क्यों सोवे सुख। त्यों त्यों करवा तो भया मुझे पे रही न हूं वारि तेरे नॉव पर जित देखो तित

तू (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छा) पांच संगी पिहू पिहू करें छता जो सुमरे मन, पांच संगी पिहू पिहू करें, छठा जो सुमरे मन, आई सूत कबीर की पाया राम रत्न (वाह वाह– वाह वाह बहुत खूब) मेरे संगी दुई जना इस वैश्नों एक राम, मेरे संगी दुई जना एक वेश्नों एक राम वो ही दाता मुक्ति का वो सुमरावे नाम (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) पानी हिते हिम भया पानी हीतें हिम भया, हिम ही गया विलाय, पानी हीते हिम भया, हिम ही गया विलाय जो कुछ था सो ही भया, अब कुछ कहा न जाये। (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) कबीर रेख सिन्दुर की काजर दिया न जाये, कबीर रेख सिन्दूर की काजर दिया न जाये, नैनम प्रीतम रमी रहा दूजा कहां समाय। (वाह वाह– वाह वाह, बहुत खूब, बहुत अच्छे) सुर नर मुनि और देवता सात दीप नौ खण्ड, कहे कबीर सब भोग्या देह धरे का दंड। (वाह वाह– वाह वाह) पांच तत्व का पूतरा मानुष धरिया नांव, पांव तत्व का पूतरा मानुष धरिया नांव, चार दिवस के पाप ने बड़ बड़ रूपेही घांव। (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात, पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात, देखत ही छिप जाएगा ज्यादा तारे प्रभाति। (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) माली आवत देखके कलियां करे पुकार माली आवत देखके कलियां करें पुकार, फूली फूली चुन लई काली हमारि बारि। (बहुत अच्छे) मन के हारे हार है, मन के जीते जीति, मन के हारे हार है, मन के जीते जीति कह कबीर हरि पाइये मन ही की परती, कह कबीर हरि पाइये मन ही की परतीती। कागद तेरी नांव री, पानी केरी गंग, कागद तेरी नांव री पानी केरी गंग, कह कबीर कैसे तिरूं पात पुंसंगी संग। (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) कह कबीर कैसे तिरूं पात पुसंगी संग। कबीर माया पापनी फंद ले बैठी हाठि कबीर माया पापनी फंद ले बैठी हाठि, सब जग फंदे फंदिया गया कबीरा काटि (वाह वाह– वाह वाह, बहुत अच्छे) सब जग फंदे फंदिया गया कबीरा काटि।

ये वाणी आपने सुनी (जी सर) और इसका मुख्य जिस्ट, सारांश क्या है कहीं कबीर, गुरू को महत्व दे रहे हैं, कहीं कबीर उस परम तत्व का परिचय प्राप्त कर रहे हैं, कहीं कबीर उस परम तत्व के अभाव में बैचेन हो रहे हैं (जी सर) कहीं कबीर उस परम तत्व के नाम के महत्व को समझा रहे हैं ये सारी वाणी, इस सारी वाणी में ये सब सुना न आपने (जी सर) उसे बीच बीच में से जो ध्वनि निकल रही थी (जी) तो कबीर को पहचानने के लिए कबीर का गुरू, कबीर का नाम स्मरण, कबीर का आराध्य, कबीर का परिचय, कबीर का परिचय मतलब कबीर का परिचय परम तत्व से (जी सर) उसको पहचानना है और उसको पहचानने के लिए मैं एक छंद आपके सामने पढ़ रहा हूं और उसकी छोटी सी व्याख्या करूंगा तो आपको समझ में आ जाएगा कि कबीर वास्तव में क्या कहते थे। (जी सर) दशरथ सूत तीहों लोक नरवाना राम नाम का मरम है आना, दशरथ के हम सुनते हैं कि कबीर दास ने राम शब्द का बहुत इस्तेमाल किया है तो कबीर दास के पास प्रश्न आ गया जैसे अभी आपने प्रश्न किया था। हैं ना अभी आपने प्रश्न कुछ और किया था। वो एक प्रश्न और आ गया कबीर के लिए वो परेशान करने लगा। (जी) भई वैसे तो तू निर्गुण निराकार की भक्ति का भक्त कहता है अद्वैतवाद को मानता है और राम कहता है हरि कहता है और गोविन्द कहता है। तो वो कहता है अरे सामान्य ज्ञान वाले मनुष्यों मैं कह रहा हूं दशरथ सूत तीहो लोक, दशरथ के पुत्र राम का व्याख्यान तो तीनों लोकों में बहुत हो चुका (जी) पर मैजिस राम की भक्ति कर रहा हूं। मैं जिसे राम कह रहा हूं वो कुछ आना है आना का अर्थ है अन्य (जी सर) विशेष, वो वो नहीं है मैं उसको तुम्हारे लिए राम का नाम ले रहा हूं क्योंकि तुम राम को पहचानते हो परन्तु मेरा वो राम नहीं है मेरा जो राम है वो क्या है। वो कुछ विशेष है। उससे पूछा कि क्या है भई तेरा विशेष, तो उसने कहा कि मेरा विशेष है उसको आप ध्यान से सुनिए मैं एक दूसरा छंद पढ़ रहा हूं उसका विशेष क्या है उसका विशेष है वो कहता है कि मैं परम तत्व को अनूप तत्व को मानता हूं। विशेष तत्व को

मानता हूं मैं किसी नाम में, रूप में, आकार, जाके मुंह माथा नहीं (जी) नहिं रूप कुरूप, कुहुप वास्ते पातरों ऐसो तत्व अनूप। वो एक अनुपम तत्व की व्याख्या करना चाहते हैं। (जी सर) उसके मुंह नहीं है माथा नहीं है वो रूपवान नहीं है, वो कुरू् नहीं है, वो छोटा नहीं है, बड़ा नहीं है, पतला नहीं है, मोटा नहीं है, वो सुगंधित नहीं है, दुर्गन्ध वाला नहीं है। देखिए कबीर के शब्दों को देखिए कुहुप वास्ते पातरों – पुष्प की गंध को आप अगर नापना चाहते हो तो ना लो परन्तु जितना नापोगे मैं कह दूंगा उससे भी महीन है। (जी सर) अर्थात, क्या हो गया वो अनुभव गम्य है वो अनुभव की चीज है। वो अभिव्यक्ति गम्य नहीं है वो वर्णनातीत है। (जी) उसको केवल अनुभव किया जा सकता है तो जिसको अनुभव कियाह जा सकता है वो कबीर का अपना राम है, हरि है, गोविन्द है, वो आप लोगों के लिए हम लोगों के मन को थोड़ा ठंडक पहुंचाने के लिए वो हरि राम गोविन्द का नाम ले लेते हैं। वास्तव मं तो। वो विशेष तत्व को महत्व देते हैं। (जी सर) मैं आज वो जो आपने छन्द सुने और उसकी जो व्याख्या मैंने थोड़ी थोड़ी व्याख्या की और कबीर के परम तत्व को पहचानने के लिए मैंने कुछ संकेत दिया। (जी सर) उस संकेतों को मैं यहीं पर रोक रहा हूं। हम इस कक्षा के बाद जब अगली कक्षा में मिलेंगे तो कबीर पर आगे चर्चा करेंगे।

अभी आप सुन रहे थे कबीर पर व्याख्यान ये व्याख्यान बी0ए0 आनर्स हिन्दी के प्रथम वर्ष के अन्तर्गत भक्तिकालीन काव्य से संबंधित था। व्याख्यान दे रहे थे डॉ0 दिनेश कुमार गुप्ता जो दिल्ली यूनीवर्सिटी के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। ये प्रस्तुति कामनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेन्टर फार एशिया की थी जिसमें सहयोग किदया वन वर्ड साऊथ एशिया ने प्रस्तुतकर्त्ता– करूणा श्रीवास्तव